बी०टी०सी० प्रथम सेमेस्टर

कला

राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0,
इलाहाबाद

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

मुख्य संरक्षक	:	**सचिव श्री नीतीश्वर कुमार** बेसिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0, लखनऊ
संरक्षक	:	**राज्य परियोजना निदेशक,** उ0प्र0, सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद, लखनऊ
निर्देशन	:	**श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0
समन्वयन	:	**श्री राम नारायण विश्वकर्मा प्राचार्य,** राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक** (एस0एस0ए0) राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ **श्री रमेश तिवारी,** सहायक उप निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद
लेखक	:	श्रीमती सुषमा यादव, श्रीमती नीलम मिश्रा, श्रीमती मंजुलेश विश्वकर्मा शोध प्राध्यापक, डॉ0 संध्या सिंह, श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह, श्रीमती परमजीत गौतम, श्रीमती अस्मत नीलो अन्सारी, श्रीमती रत्ना यादव, श्रीमती रश्मि चौरसिया, डॉ0 श्रीमती चन्दना मुखर्जी, श्रीमती मीरा अस्थाना, श्री संजय यादव, श्री नितिन अरोरा, श्रीमती अर्चना मिश्रा, श्री पंकज त्रिपाठी।
कम्प्यूटर कम्पोजिंग	:	राजेश कुमार यादव

कक्षा शिक्षण : विषयवस्तु– कला

कला :–

- ❖ दृश्य कला
- ❖ स्वतंत्र भाव प्रकाशन सौन्दर्यानुभूति, रंगों का ज्ञान, रेखाओं का ज्ञान, आकार–प्रकार का ज्ञान देना।
- ❖ हस्ताकला
- ❖ अनुपयोगी वस्तु से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, कोलाज निर्माण, मिट्टी के खिलौने बनवाना।
- ❖ चित्रकला के विभिन्न सामग्री का प्रयोग जैसे पोस्टर, कलर, वाटर कलर, पेन्सिल एवं रबड़ पेन एवं स्याही आदि।
- ❖ **प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल जैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है।**

- विद्यालय तथा घर की साज–सज्जा हेतु सामग्री।
- हसतकला के विभिन्न तरीकों–कोलाज, मिट्टी के सामान, पेपर कटिंग, पेपर फोल्ड, चूड़ियों से विभिन्न सजावअी सामान, वाल हैंगिक, लिफाफे आदि का निर्माण।
- विभिन्न अवसरों पर चित्रकला, हस्तकला, मेंहदी, रंगोली, अल्पना आदि प्रतियोगिता करना।
- मिट्टी के खिलौने, अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तुए बनाना।

दृश्य अथवा रूपप्रद कलाएँ (Visual Arts)

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- कला का संक्षिप्त परिचय
- दृश्यात्मक कलाओं का महत्व
- दृश्यात्मक कला के प्रकार
- कला के अंग एवं तत्व

कला (Art)

कला मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। कलाओं के द्वारा ही मनुष्य शान्ति व सुख का अनुभव करता है और उसकी सहायता से हम अपने जीवन को सजाते संवारते और कलामय बनाते हैं। किसी अच्छी कलाकृति को देखते ही मनुष्य स्वतः ही भाव विभोर हो उठता है और उस कलाकृति के रसास्वादन में लीन हो जाता है। भारतीय आचार्यों ने कला के जिस उच्च स्वरूप की परिकल्पना की है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैसे– ***'लीयते परमानन्दे ययाऽत्मा सा परा कला।***

अर्थात् जो कला परम आनन्द प्रदान करती है, वही सच्ची व श्रेष्ठ कला है।

प्लेटो ने कहा है कि– ''कलायें मानव को शिक्षित व सुसंस्कृत बनाती है।''

दृश्य अथवा रूपप्रद कलायें नेत्रों का विषय होने के कारण ''चाक्षुष कलाओं'' की श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं। इसमें चित्रकला, मूर्तिकला व वास्तुकला को स्थान दिया गया है। दृश्य कलाओं को मूर्त कलाओं की श्रेणी में भी रखा जा सकता है, क्योंकि इन कलाओं का आधार स्थूल तत्व होते हैं जैसे–चित्रकला, मूर्तिकला, वस्तुकला

• चित्रकला

कलाओं में चित्रकला सर्वश्रेष्ठ है, और उसकी साधना करते हुए धर्म, अर्थ काम व मोक्ष इन चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति हो सकती है। घरों में चित्रांकन के समान अन्य कुछ मंगलदायक नहीं है–

कलानाम् प्रवरम् चित्रम्, धर्म कामार्थ मोक्षदम्।

मांगल्यम् प्रथमम् होतद्, गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।– चित्रसूत्र

- ***सोचें***– *दृश्य कला क्या है? एवं उनके प्रकार का अवलोकन करें।*

रेखा वर्ण, वर्त्तना और अलंकरण इन चारों की सहायता से चित्र का स्वरूप निष्पादित होता है। इस विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिये **यशोधर पण्डित** के द्वारा रचित श्लोक उल्लेखनीय होगा।

रूप भेदाः प्रमणानि भाव लावण्य योजनम्।

सादृश्य वर्णिका भंग इति चित्र षडांगनम्।।

वे छः अंग इस प्रकार हैं–

1. रूप भेद
2. प्रमाण
3. भाव
4. लावण्य योजना
5. सादृश्य
6. वर्णिका–भंग

- आधुनिक विचार धारा के अनुसार भी चिंत्र के छः तत्व (Elements) माने गये हैं–

1. रेखा 2.रूप 3.वर्ण 4. तान 5. पोत 6. अन्तराल

> एक रूसी कलाशास्त्री के कथनानुसार "कलाकृतियों में यह विशेषता पायी जाती है कि वे जीवन प्रतिक्रियाओं पर अपना निर्णय प्रदान करती रहती है।"

- भारतीय चित्रकला का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना कि प्राचीन मानव इतिहास।

अर्थात् चित्रकला समस्त शिल्पों और कलाओं में प्रधान है तथा सर्वप्रिय है। वह भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक भावना तथा सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की समन्वित रूप में अभिव्यक्ति करती है।

कला के अंगों एवं तत्वों पर विचार करें।

मूर्तिकला

चित्रकला के पश्चात् स्थूलता की दृष्टि से मूर्तिकलाओं का स्थान आता है। मिट्टी पत्थर अथवा धातु आदि को कलाकार आकार व रूप प्रदान करती हैं, जो कि त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करता है। भारतीय समाज में मूर्तिकला को भी अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त है। प्राचीन भारतीय मन्दिरों में मूर्तिकला का अत्यन्त उदात्त स्वरूप देखा जा सकता है। दक्षिण भारत में 'नटराज' की मूर्ति परमात्मा के विराट स्वरूप का प्रतिबिम्ब है।

> "किसी भी ठोस प्रदार्थ की लम्बाई चौड़ाई और मोटाई के अनुसार इसका किसी भी यन्त्र से कोई रूप प्रदान करना मूर्ति कला कहलाती है।"

भारतीय मूर्तिकला के प्रमुख प्रयोजन हैं–

धार्मिक, स्मारक और अलंकरण।

इस दृष्टिकोण से मूर्तिकला का सम्बन्ध वास्तुकला से घनिष्ठतम् रहा है।

वास्तुकला अथवा स्थापत्यकला

"वास्तु" शब्द की उत्पत्ति **"वस्"** धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'निवास करना' होता है। अर्थात् वह भवन जिसमें मनुष्य निवास करते हैं। उपरोक्त दोनो दृश्यकलाओं– चित्रकला व मूर्तिकला को वास्तुकला के अन्तर्गत ही स्वीकार किया गया है। भारतीय वास्तुकला के विकास का महान स्रोत धर्म रहा हैं और प्राचीन मन्दिरों, गुफा–मन्दिरों आदि के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है, जब हम इन तीनों दृश्य–कलाओं को एक साथ, एक ही स्थान पर देखते हैं।

अतः अन्य कलाओं के समान ही वास्तुकला का भी प्रत्यक्ष सम्बन्ध सौंदर्य और रस–निष्पत्ति है। 'ताजमहल' की सुन्दरता इसका जीता–जागता प्रमाण है।

प्रश्न

1. विभिन्न कलाओं का संक्षिप्त परिचय दें।
2. चित्रकला का अन्य कलाओं से सम्बन्ध समझें एवं स्पष्ट करें।
3. स्थापत्य कला, चित्रकला व मूर्ति कला के आपसी सम्बन्धों को सोदाहरण स्पष्ट करें।

स्वतंत्र भाव प्रकाशन

उद्देश्य

- स्वतंत्र भाव प्रकाशन द्वारा कल्पना का विकास करना।
- भावों व विचारों को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता देना।
- सहज अभिव्यक्ति में सहायता प्रदान करना।

छात्र या व्यक्ति जो भाव स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त करता है, वही उसका स्वतंत्र भाव प्रकाशन कहलाता है, अर्थात् स्वतंत्र भाव प्रकाशन ऐसी मानसिक कल्पना है, जिसे मानव स्वतंत्रतापूर्वक सार्थकता प्रदान करता है या मूर्त रूप प्रदान करता है। मुक्त अभिव्यक्ति हृदय से निकला वह स्वर या भाव है, जिसमें किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं होता है।

इन्हें समझे–

स्वतन्त्र भाव प्रकाशन (Free Expression) को निम्नलिखित सूत्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है– भाव + प्रकाशन की स्वतंत्रता– स्वतंत्र भाव प्रकाशन

अर्थात् सबसे पहले भाव (विचार) होना आवश्यक है। भाव होने के साथ उसे व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, तभी स्वतन्त्र भाव प्रकाशन सम्भव है अन्यथा स्वतन्त्र भाव प्रकाशन सम्भव नहीं है।

स्वतंत्र भाव प्रकाशन का महत्व

स्वतन्त्र भाव प्रकाशन का महत्व बाल–कला के सन्दर्भ में बहुत अधिक होता है। छात्रों में कलात्मक प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। उनकी कलात्मक प्रवृत्तियों को यदि अभिव्यक्त होने का अवसर प्राप्त होगा तो निःसन्देह छात्र का चतुर्मुखी विकास सम्भव है। स्वतन्त्र अभिव्यक्ति उज्ज्वल, उन्नत और उपादेय हुआ करती है। जब भाव, ज्ञान और कर्म एक साथ मिलकर क्रियात्मक रूप धारण करते हैं तो ऐसी अवस्था में पूर्ण की गयी रचना (कृति) उपादेय कलाकृति होती है।

छात्रों पर कोई विधि या शैली थोपी न जाय, उन्हें अपने भावों या विचारों को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाय तो छात्र कला के क्षेत्र में अवश्य प्रवीणता अर्जित करेगा।

चर्चा करें–

- स्वतंत्र भाव प्रकाशन क्या है?..
  ....।
- स्वतंत्र रेखांकन क्यों आवश्यक है ?..
  ....।

बालकला में स्वतंत्र भाव प्रकाशन का महत्व इसलिये भी अधिक है क्योंकि–

इससे छात्रों को अपने भावों को कलात्मक रूप देने में सहायता मिलती है और छात्रों में दक्षता का विकास होता है।

छात्र की भाव व्यंजना किसी प्रदत्त माध्यम से बढ़ाकर उसका उपयोग किसी वांछित कार्य में किया जा सकता है क्योंकि स्वतंत्र भाव अभिव्यक्ति में प्रत्येक छात्र अपना–अपना दृष्टिकोण प्रयोग कर नयी कल्पना को मूर्त रूप देगा, इससे सुन्दर कलाकृति की प्राप्ति सम्भव होगी।

स्वतंत्र भाव प्रकाशन का कार्य दो प्रकार से होता है– 1. निर्देशित 2. अनिर्देशित

- *एक वह जो किसी दिये गये निर्देश के अनुसार चित्रण किया जाय उसे निर्देशित स्वतंत्र भाव प्रकाशन कहते हैं।*
- *दूसरा वह जो बिना किसी निर्देश के चित्रित किया जाय।*

निर्देशित भाव प्रकाशन के अन्तर्गत चित्रण करने वाला स्वतंत्र नहीं होता, इसका मुख्य रूप कहानी चित्रण है–

- अनिर्देशित भाव प्रकाशन के अन्तर्गत चित्रण करने वाला स्वतंत्र होता है, वह अपनी इच्छानुसार विविध भावनाओं का काल्पनिक चित्र अंकित करता है। जैसे– प्राकृतिक दृश्य, घटना, व्यक्ति या वस्तु के माध्यम से वांछित भाव उत्पन्न हो सकते हैं।

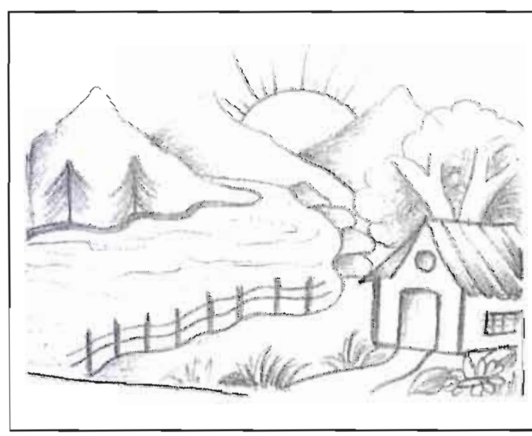

मूल्यांकन प्रश्न

- स्वतन्त्र भाव प्रकाशन से क्या तात्पर्य है ?
- स्वतन्त्र भाव प्रकाशन के प्रकार बताएँ।
- छात्रों के लिये स्वतन्त्र भाव प्रकाशन क्यों आवश्यक है ?
- प्रकृति चित्रण एवं कहानी चित्रण का अभ्यास करें व समझें एक चित्रण बनाकर रंग भरे।

सौन्दर्यानुभूति

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- सौन्दर्य की अवधारणा स्पष्ट करना
- सौन्दर्य बोध एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सिद्धान्त से अवगत कराना।
- सौन्दर्य प्राप्ति के आवश्यक तत्वों से अवगत कराना।

सौन्दर्य एक मानसिक अवधारणा है क्योंकि बुद्धि वस्तुओं के रूप को विश्लेषण के द्वारा सुन्दर या कुरूप मानती है। तर्क के द्वारा विभिन्न– अनुभूतियों को स्पष्ट किया जाता है। बुद्धि और भावना में वही सम्बन्ध है, जो सत्य और सौन्दर्य में पाया जाता है। कला और सौन्दर्य में मानवता के गुण विशेष का लक्षण पाया जाता है। मानवता का प्रथम गुण विवेक और उसका तर्कपूर्ण प्रयोग है, जिससे वह सौन्दर्य को समझता है। जो वस्तु प्रिय होती है वह सुन्दर भी लगती है यहीं से कला प्रारम्भ होती है। कला में रूप सौन्दर्य रागात्मक विवेक की ही देन है।

कला में तीन तत्व प्रमुख रूप से विद्यमान रहते हैं– रूप, भोग एवं अभिव्यक्ति।

रूप आन्तरिक और वाह्य दो प्रकार का होता है। कला में वाह्य रूप की प्रधानता होती है। उसका लावण्य आकर्षक होता है और सौन्दर्य का जन्मदाता होता है।

कला का अन्तिम ध्येय सौन्दर्यानुभूति है जिसे प्रत्येक श्रोता या दर्शक आनन्द की प्राप्ति के समय अनुभव करता है।

अतः हम कह सकते हैं कि जिस कृति द्वारा सौन्दर्यानुभूति होती है, वह कला का अंग है।

सोचिये और लिखिये

- सौन्दर्य बोध पर प्रकाश डालें।
- सौन्दर्य प्राप्ति के आवश्यक गुणों को बताएँ।

सौन्दर्यानुभूति का तात्पर्य

सृष्टिकर्त्ता की प्रत्येक वस्तु में उपादेयता एवं सुन्दरता होती है। उसके स्वरूप को मानव स्वार्थवश कुरूप कर देता है जिसे हम पाप कहते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सौन्दर्य के भाव को नष्ट करना ही पाप है और सौन्दर्य को बनाये रखना ही पुण्य है।

> एक यूनानी दार्शनिक का कथन है कि– "सौन्दर्य तो नैतिक भलाई है और कुरूपता ही पाप है।"

सौन्दर्य ही कला का अन्तिम लक्ष्य है जो शिवम् (उपादेयता) पर आधारित होता है और शिवम् सत्य के आधार पर जीता है। अतः किसी भी सौन्दर्य–भाव या रूप सृजन के लिये सत्य को ही आधार माना जा सकता है। कला का विश्लेषण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

1. कला सत्य की खोज और स्वयं सत्य है।
2. कला उपादेय और कल्याणकारी भी है।
3. कला सौन्दर्य है, जिसकी अनुभूति सौन्दर्य के ज्ञान पर आधारित है।

चर्चा करें–*सौन्दर्यानुभूति से क्या तात्पर्य है ?*

सौन्दर्य प्राप्ति के आवश्यक तत्व

कला के अन्तिम लक्ष्य (सौन्दर्य) तक पहुँचने के लिये निम्नलिखित तत्व आवश्यक हैं–

1. सत्य की खोज– सत्य की खोज अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति उस समय सम्भव है जब किसी वस्तु के प्रति हमारे ज्ञान के प्रत्यय स्पष्ट और सुदृढ़ हों। ज्ञान के प्रत्यय स्पष्ट और सुदृढ़ बनाने के लिये निरीक्षण, स्वाध्याय, मनन सत्यापन आदि क्रियाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान होना आवश्यक है।

स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलने पर ही सूक्ष्म ज्ञान की प्राप्ति होती है।

सत्य की खोज में शिवम् (उपदेयता) की क्षमता

प्रत्यक्ष खोज के आधार पर जो सत्य ज्ञान के प्रत्यय निर्मित हुये हैं उनके द्वारा उपादेय रूप की रचना होनी चाहिए जो सबकी भलाई में सहायक हो।

कलाकार की भावना उन ज्ञान के प्रत्ययों के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त हो कि वह दर्शक या श्रोता के लिये कल्याणकारी हो, तो सत्य की खोज में बने ज्ञान के प्रत्यय उपादेय एवं शिवम् भावना से ओत–प्रोत हो सकें।

उपादेय ज्ञान के प्रत्ययों के समन्वय द्वारा सौन्दर्यानुभूति

जब विभिन्न ज्ञान के प्रत्ययों के समन्वय के द्वारा एक सार्थक आकृति का जन्म होता है तो उससे हृदय में अपार आनन्द की प्राप्ति होती है। कलाकार को आत्म सन्तुष्टि प्राप्त होती है। दर्शक और श्रोता उसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। इससे उन्हें अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है।

सौन्दर्य शास्त्र

भारतीय दर्शन में 'सौन्दर्यशास्त्र' एक नवीन शब्द है, क्योंकि वर्तमान युग से पूर्व भारतीय वाङ्मय में इस शब्द का वर्णन नहीं मिलता है। हिन्दी साहित्य में इसका प्रयोग 'ऐस्पेटिक्स' के पर्यायवाची के रूप में किया गया है। 'ऐस्पेटिक्स' शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के 'ऐस्पेसिस' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है– **'इन्द्रिय संवेदना'**

कांट ने सौन्दर्यशास्त्र को अभिरूचि विषयक चिन्तन कहा है।

हीगल ने इसे कला का दर्शन कहा है

सौन्दर्य, आनन्द और रस

भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में आनन्द और रस की धारणा कोई आधुनिक धारणा नहीं है। इसका प्रारम्भ तो आचार्य अभिनव गुप्त द्वारा पहले ही किया जा चुका है। इस प्रकार सौन्दर्य, [redacted] सभी कलाओं का आधार है।

> आचार्य मम्मट का कहना है कि रस और आनन्द की धारणा में समन्वय है।

कला और सौन्दर्य का भारतीय दृष्टिकोण

भारतीय विचारकों ने कला और सौन्दर्य के सृजन पक्ष का वर्णन करते हुये कला के सौन्दर्य पक्ष पर अप्रत्यक्ष रूप से विचार प्रकट किये हैं। भारत में प्राचीन शिल्पशास्त्रों ने सुन्दर प्रतिमाओं और कलाकृतियों के सृजन के सिद्धान्तों को निर्धारित किया गया है। इनमें चित्रमूर्ति, वृहत् संहिता, अग्निपुराण तथा प्रतिमा महालक्षण आदि है।

मैक्समूलर के अनुसार– "हिन्दू मस्तिष्क में प्राकृतिक सौन्दर्य नाम की कोई चीज नहीं है।" वे मूर्ति और चित्र से सम्बन्धित सौन्दर्य के प्रति परम्परागत रहे हैं।

> **भारतीय कला में सौन्दर्य उसका प्राण माना गया है। लेकिन सम्पूर्ण विश्व कलात्मक** [redacted]

कलाकार की कला उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब होती है, जिससे कलाकार का सौन्दर्य का दर्शन उसकी कला के सृजन का आधार बनता है। अतः कलात्मक सौन्दर्य, वस्तुगत सत्ता आन्तरिक चेतना और कलाकार के व्यक्तित्व का एक मिश्रित गुण है जिसमें रूप, भोग और अभिव्यक्ति का आस्वादन ही सौन्दर्य का आनन्द है।

सोचिये और लिखिये–

- सौन्दर्य के बारे में क्या सोचते हैं ? स्पष्ट करें।
- कला और सौन्दर्य के भारतीय दृष्टिकोण को संक्षेप में लिखें।
- सौन्दर्य प्राप्ति के आवश्यक तत्वों में किन्ही दो के बारे में अपनी राय प्रस्तुत करें।

आप स्वयं करें–

कोई ऐसी कलाकृति को दर्शायें, जिससे सौन्दर्य की अनुभूति हो सके।

रंगों/वर्णों का ज्ञान

प्रशिक्षण बिन्दु

- रंगों का महत्व
- रंगों का वर्गीकरण
- आदर्श रंग
- रंगों का संगीत
- रंगों की उत्पत्ति
- रंगों का प्रभाव

Colour is the property of light rather than of bodies. It is not an entity but a sensation conveyed to the mind through media of the eyes. - F.A. Taylor.

चित्र के तत्त्वों में रंग या वर्ण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य के जीवन में भी रंगों का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्ण पूर्णतः प्रकाश व दृष्टि पर निर्भर तत्व है। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई रंग अवश्य होता है और मूलतः वस्तुओं की पहचान उनके धरातलीय रंग के कारण ही होती है और प्रकाश की मात्रा के कम या अधिक होने से एक ही रंग की वस्तुएं अलग–अलग दिखाई पड़ती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि– रंग <u>'वर्ण' प्रकाश का गुण है, कोई स्थूल वस्तु नहीं है। इसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, बल्कि 'अक्षपटल' द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाला एक प्रभाव है।</u>

[illegible]

क्रियाविधि

प्रशिक्षु बच्चों से वस्तुओं को दिखाते हुये रंगों के बारे में पूछें।

वर्ण की तरंग गति

वर्ण बोध में तरंग गति का अपना स्थान है। प्रत्येक वर्ण की तरंग की अपनी निश्चित लम्बाई होती है और जितनी अधिक लम्बाई होती है उतनी ही उसकी चाल शीघ्र होती है। सूर्य की किरणों में सात चाक्षुष वर्ण "VIBGYOR" जिन्हें हम " प्रिज्म" की सहायता से देख सकते हैं, विभिन्न अनुपातों में मिलकर सफेद रंग बनाते हैं। इस वर्ण क्रम में बैंगनी (Violet) नील (Indigo) नीला (Blue) हरा (Green) पीला (Yellow) नारंगी (Orange) तथा लाल (Red) ये सात रंग होते है। इस प्रकार 'वण/रंग' वस्तु का गुण नहीं है। इसका मूल कारण सूर्य का सतरंगी प्रकाश है।

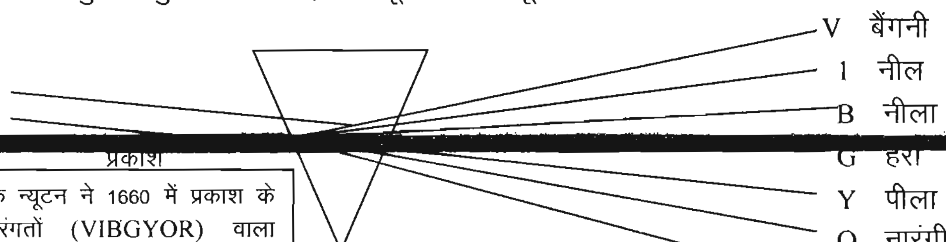

वैज्ञानिक न्यूटन ने 1660 में प्रकाश के सात रंगतों (VIBGYOR) वाला वैज्ञानिक चक्र प्रस्तुत किया।
ठीक इसके विपरीत पदार्थ के रंगतों को मिलाने से रंगीन धूमिल रंग (Grey) बनेगा।

इन्हें भी जाने– *सूर्य के प्रकाश में कितने रंगों का सम्मिश्रण है ?*

रंगों/वर्णों का वर्गीकरण

चित्रकला के छः अनिवार्य अंगों में से रंग भी चित्रण कार्य के आकर्षण को बढ़ाते हैं। आकार व रेखा यदि चित्रण विद्या में शरीर स्वरूप हैं तो रंग चित्रण में प्राण स्वरूप है। कलाशास्त्री रंगों को दो प्रकार का मानते हैं– 1 प्राथमिक /मुख्य रंग, 2. गौण/द्वितीयक रंग

1. प्राथमिक या मौलिक रंग (Primary Colours)

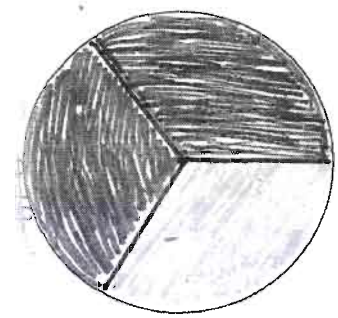

पूर्व काल में कलाविदों ने तीन प्रारम्भिक रंग माने थे–

1. लाल
2. पीला
3. नीला

इनको प्रारम्भिक रंग इस कारण से कहा गया क्योंकि इनमें दूसरे रंगों की मिलावट नहीं है ये अपने आप में पूर्ण है और सम्भवतः यह कारण भी हो सकता है कि ये तीनों रंग हमें मूलतः प्रकृति प्रदत्त है। जैसे लाल मिट्टी से लाल रंग, पीली मिट्टी से पीला, नील खनिज से नीला रंग।

द्वितीयक या गौण रंग (Secondary Colours)

प्रारम्भिक तीन रंगों को मिलाकर बनाये गये रंग ही गौण रंग या द्वितीयक रंग कहलाते हैं जैसे– लाल और पीले रंग के मिश्रण से नारंगी, पीले व नीले रंग के मिश्रण से हरा तथा नीले और लाल रंग के मिश्रण से बैंगनी रंग तैयार होता है।

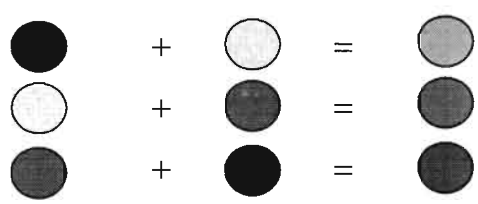

चर्चा करे– *मुख्य /प्रधान रंगों एवं द्वितीयक/गौण रंगों पर प्रकाश डालें।*

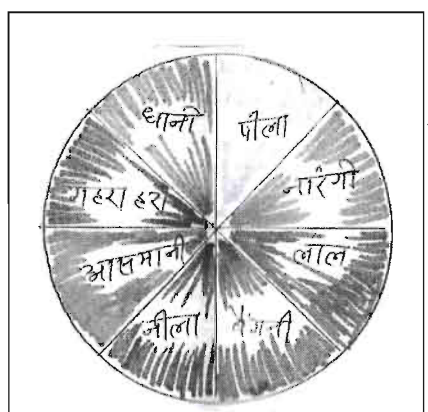

प्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक आस्टवाल्ड के द्वारा निर्धारित आदर्श रंगों के आस्टवाल्ड चक्र में आठ रंगों का समावेश है। जो क्रमशः पीला, नारंगी, लाल बैंगनी नीला और आसमानी गहरा हरा और धानी है। इन रंगों में चार रंगों में परस्पर विरोधाभास है। साथ ही आस्टवाल्ड रंग चक्र में प्रत्येक अलग रंग पहले वाले रंग से सामंजस्य रखता है, और इस चक्र में आमने सामने के रंग ठण्डे व गर्म होते हैं। अतः वे एक दूसरे के विरोधी हैं जैसे–**<u>आदर्श रंग चक्र (आस्टवाल्ड रंग चक्र)</u>**

तटस्थ रंग (Neutral Colours)

रंगों के प्रकार के अन्तर्गत दो ऐसे रंग भी हैं जिन्हें तटस्थ रंग कहा जाता है। इनका महत्व अन्य सभी रंगों में किया जाता है। रंगों के अधिक हल्के शेड या टिन्ट शेड्स बनाने में सफेद रंग को विभिन्न रंगों में मिलाया जाता है तथा विभिन्न रंगों के गहरे या (Dark) शेड्स बनाने में काले रंग का प्रयोग किया जाता है। सफेद प्रकाश का रंग है तथा काला अन्धकार का प्रतीक है।

ऊष्ण रंग (Warm Colours)

वे रंग जो ऊष्ण प्रभाव वाले होते है जैसे, पीला, लाल, नारंगी तथा बैंगनी। इन्हें ऊष्ण या गर्म रंग कहा जाता है।

ठण्डे रंग (Cool Colours)

जिन रंगों का नेत्रों पर शीतल प्रभाव पड़ता है वो रंग शीतल या ठण्डे रंग कहलाते है जैसे– नीला, हरा, समुद्री हरा, आसमानी आदि।

***इन्हें भी जानें**– आदर्श रंगों को क्रम से जानें–*

टिन्ट, शेड और टोन (Tint, Shade andTone)

टिन्ट (Tint)– जब किसी प्रधान या गौण रंग में सफेद रंग बराबर मात्रा में मिलाने पर जो रंग तैयार होता है वह टिन्ट कहलाता है।

शेड (Shade)–

जब किसी प्रधान रंग या गौण रंग में काला रंग मिलाने पर जो रंग तैयार होता है वह शेड कहलाता है।

टोन (Tone)– जब किसी प्रधान रंग या गौण रंग में काला और सफेद रंग का मिश्रण करते है तो इस रंगत को टोन कहते है।

***चर्चा करे**– टिन्ट, टोन व शेड क्या है ?*

रंग / वर्ण प्रभाव

रंगों का हमारी भावनाओं व मनः स्थितियों से सीधा सम्बन्ध होता है। चित्र में रंग भरते समय उनके प्रतीकात्मक प्रभाव को भी ध्यान में रखना चाहिए। उष्ण रंग सूर्य, अग्नि व उष्णता से सम्बन्धित रंगतें हैं। इसके विपरीत शीतल रंग–आकाश, पानी, हरियाली आदि के प्रभाव के द्योतक हैं।

रंगों के प्रभाव की दृष्टि से मूल रंग प्रसन्नता उत्तेजना, चंचलता, क्रियाशीलता तथा मिश्रित रंग उदासीनता निष्क्रियता, मुक्ति व शान्त प्रभावों के द्योतक हैं। इन प्रभावों को हम निम्न प्रकार से भली–भाँति समझ सकते हैं–

पीला– यह सर्वाधिक प्रकाशपूर्ण रंगत है। यह सूर्य के प्रकाश का भी प्रतीक है। ये रंगतें प्रफुल्लता, प्रकाश, बुद्धिमता, प्रसन्नता, समीपता की द्योतक हैं।

लाल– यह सर्वाधिक सघन और आकर्षक रंगत है। ये रंग उत्तेजना, प्रसन्नता तथा उल्लास, क्रोध, संघर्ष, उष्णता, प्रेम, आवेग आदि भावों का द्योतक है।

नीला– यह रंग शीतल प्रकृति का हैं, साथ ही यह विस्तार को भी दिखाता है। जैसे– समुद्र का विस्तार, आकाश का विस्तार आदि। यह रंग शीतलता तथा आनन्द का द्योतक है।

हरा– यह रंग पीले व नीले रंग की विशेषताओं से युक्त रंग है, क्योंकि इन दोनों के मिश्रण से ही यह बनता है। यह रंग विश्राम, सुरक्षा, मनोहरता, विकास का द्योतक है।

नारंगी– यह रंगत लाल व पीले रंग के मिश्रण से बनती है। अतः दोनों का मिश्रित प्रभाव देने वाली होती है। यह वर्ण ज्ञान, वीरता, प्रेरणा का द्योतक है।

बैंगनी– यह रंगत लाल और नीले रंगत के सम्मिश्रण से बनती है। यह रंगत राजसी (Royalty) , सम्मान, रहस्य की द्योतक मानी जाती है।

सफेद– यह वर्ण शुद्धता (Purity) शान्ति (Peace) एकता (Unity) उज्ज्वलता, सत्य और विकारहीनता का द्योतक है।

काला– यह रंग अवसाद (Depression) अन्धेरा (Darkness) भय (Fear) व बुराई का द्योतक है।

धूमिल वर्ण (Gray)– यह काली व सफेद रंगतों के मिश्रण से बनता है। अतः इन दोनो रंगतों का मिश्रित प्रभाव इसमें उपस्थित रहता है। यह रंग तटस्थता, संयम और नम्रता का द्योतक है।

चर्चा करें– *मनुष्य के जीवन में रंगों के प्रभाव का क्या महत्व है ?*

क्रियात्मक कार्य

1. आदर्श रंग चक्र में क्रम से रंग भरें।
2. द्वितीयक रंग किन–किन रंगों के मिश्रण से तैयार होते हैं– स्वयं करें।
3. सफेद और काला रंग के मिश्रण से किस प्रकार की रंग प्राप्त होती है ? स्वयं करें।

रेखाओं का ज्ञान

प्रमुख प्रशिक्षण बिन्दु

- रेखाओं का अर्थ
- रेखा की परिभाषा
- रेखाओं का वर्गीकरण
- रेखाओं का प्रभाव
- रेखाओं का महत्व
- रेखा के प्रयोग अथवा रेखांकन
- रेखांकन के प्रकार

कला सृजन में रेखा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। किसी चित्र तल पर कोई चिन्ह अंकित करना 'अंकन' कहलाता है। प्राचीन भारतीय शास्त्रीय कला पूर्णतया रेखा–प्रधान कही जा सकती है। रेखा दो बिन्दुओं या दो सीमाओं के बीच की दूरी है, जो बहुत सूक्ष्म होती है। अतः रेखा को हम चित्रकार के भाव का प्राचीनतम आविष्कार तथा कलाकार की अभिव्यक्ति का मूल आधार भी मान सकते हैं। प्रकृति में हमें रेखा कहीं भी दृष्टिगत नहीं होती वरन् कलाकार ने अपनी सुविधा के लिये ही रेखा को आविष्कृत किया है।

चर्चा करें– *रेखा का क्या महत्व है ? स्पष्ट करें।*

रेखा की परिभाषा

- रेखा दो बिन्दुओं या दो सीमाओं के बीच का विस्तार है और कई बिन्दुओं के जुड़ाव या बिन्दुओं के पंक्तिबद्ध समूह से 'रेखा' बनती है।

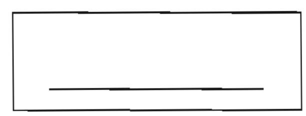

- आधुनिक ज्यामिति में रेखा से 'सरल रेखा' का ही अर्थ ग्रहण किया जाता है। परन्तु कला के सन्दर्भ में अनेक प्रकार की रेखाएँ अपना अस्तित्व रखती हैं।

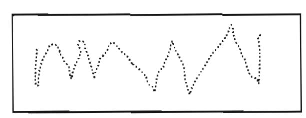

- यहाँ रेखा न खींची जाने पर भी उनके मध्य रेखीय प्रभाव आ जाता है। ऐसी रेखाएँ अनुभूत रेखाएँ (Felt Lines) कही जाती हैं।

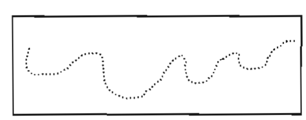

स्वयं करें– *रेखा को परिभाषित करते हुये चित्रकला में रेखा पर प्रकाश डालें।*

रेखाओं का वर्गीकरण (Classification of Lines)– अंकन के आधार पर हम रेखाओं को मुख्यतः दो भागों में बांट सकते हैं–

1. औपचारिक रेखाएँ (Formal Lines)
2. अनौपचारिक रेखाएँ (Informal Lines)

1. **औपचारकि रेखाएँ (Formal Lines)** ज्यामितिक रेखाएँ (Geometrical Lines) एवं स्थापत्य Architectural) की रेखायें जो कि यन्त्रों के माध्यम से खींची जाती हैं, वे औपचारिक रेखाएँ कहलाती हैं। ये रेखायें अवैयक्तिक (Impersonal) होती है। इन रेखाओं का उद्‌देश्य उपयोगी रूपाकारों का निर्माण होता है।

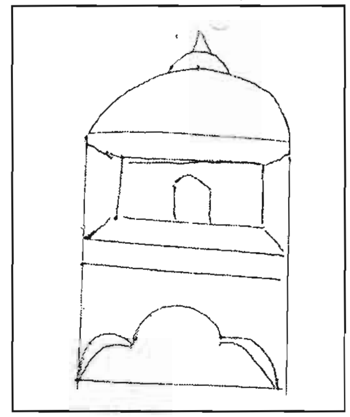

2. **अनौपचारिक रेखायें**– हाथ से खींची गई रेखायें 'अनौपचारिक' वैयक्तिक (Personal) व विविधता (Veriable) लिये हुये होती हैं। इस प्रकार ये रेखायें–कोमल शक्तिशाली, पुष्ट व गतिपूर्ण, लहरदार तथा दृढ़ मोटी व बारीक, तीखी आदि अनेक प्रकार की हो सकती हैं। हाथ से खींची गई ये रेखायें भावों की प्रतीक भी होती है जो कि प्रवाहपूर्ण ढंग से खींची गई हों। इस प्रकार ये रेखाएँ अपने आप में एक विशेष चारित्रिक विशेषता रखती हैं–

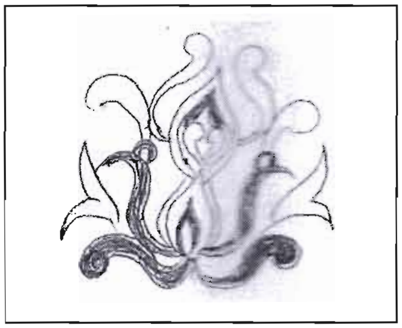

***स्वयं करें**– रेखाओं का वर्गीकरण करते हुये चित्रण के माध्यम से उन रेखाओं को व्यक्त करें।*

रेखा के प्रभाव

रेखा चित्र का विशेष गुण है भिन्न दिशाओं की ओर जाती हुई इन रेखाओं के भिन्न–भिन्न प्रभाव होते हैं, जिनका सम्बन्ध हमारी भावनाओं से होता है। हर रेखा अपना अस्तित्व रखती है तथा उनमें एक अर्थ निहित रहता है। प्रमुख प्रभाव अग्रलिखित हैं–

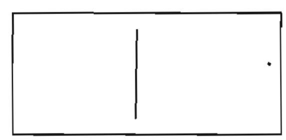

1. सीधी खड़ी रेखा

सीधी खड़ी रेखायें ऊंचाई की प्रतीक हैं। जो हमारे मन में उच्चता महत्वाकाँक्षा दृढ़ता, गौरव, स्थिरता एवं शाश्वतता की अनुभूति जगाती है।

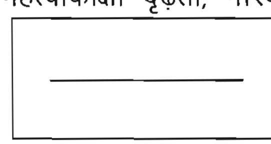

2. सीधी पडी रेखा–

यह रेखा क्षितिज के समानान्तर व सीधी पड़ी रेखा होती है। जो लम्बवत् रेखा को आधार प्रदान करती हैं। अतः ये रेखायें मानसिक शान्ति, विश्राम, निष्क्रियता, सन्तुलन, स्थिरता , मौन आदि भावों का द्योतक है।

3. तिरछी अथवा कर्णवत् रेखा

ये रेखायें अन्तराल में तिरछी व आड़ी खींची जाती हैं, अतः कर्णवत् रेखायें कही जाती हैं। जैसे– दौड़ने की स्थिति, नृत्य, खेल–कूद आदि के समय हाथ व पैरों की स्थिति कर्णवत् हो जाती है।

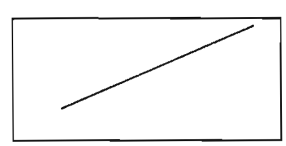

4. कोणीय रेखा— जो रेखायें, शीघ्रता से दिशा परिवर्तित करती है वे कोणीय रेखायें कही जाती है। ये रेखायें असुरक्षा अस्पष्टता, व्याकुलता, संघर्ष, क्षणिकता की द्योतक होती हैं।

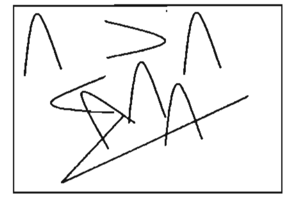

क्रियाकलाप— सीधी व तिरछी रेखाओं के माध्यम को कोई चित्र का निर्माण करें—

5. एकपुंजीय रेखा

प्रकृति की सुन्दरता, फलों—फूलों से लदे वृक्षों की सुन्दरता को इसी प्रकार की रेखाओं द्वारा दर्शाया जा सकता है। ये रेखायें शोभा, प्रसार, स्वच्छन्दता व अभिलाषा आदि भावों की द्योतक हैं।

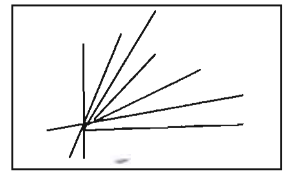

6. चक्राकार रेखा

वृत्ताकार एवं कुण्डलित सर्पाकार रेखायें चक्राकार रेखाओं के अन्तर्गत आती हैं। ये रेखायें गति, उत्तेजना, वृद्धि शक्ति, निरन्तरता व पूर्णता आदि भावों का द्योतक है।

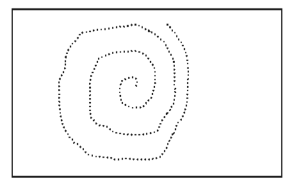

7. प्रवाही रेखा

लयात्मक और प्रवाहयुक्त रेखायें जैसे— नदी की प्रवाहयुक्त व लयात्मक रेखायें इसके अन्तर्गत आती हैं। अतः ये रेखायें गति माधुर्य, लावण्य आदि भावों को दर्शाती हैं।

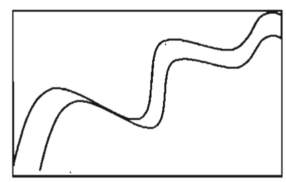

रेखांकन

रेखा द्वारा जब कोई अर्थ पूर्ण अंकन किया जाता है तो वह रेखांकन कहलाता है। रेखा अपने आप में सम्पूर्ण होती है। अतः अन्य कला के तत्वों के बिना भी वह अपनी अभिव्यक्ति में सम्पूर्ण है। सम्पूर्ण सृष्टि रेखा के अन्तर्गत समा सकती है यही रेखांकन है। रेखांकन में प्रयुक्त रेखारूप के बाह्य स्वरूप को ही नहीं उसके सम्पूर्ण आन्तरिक बनावट को भी अभिव्यक्त करती है। जिस प्रकार रेखा के विभिन्न प्रकार हैं, उसी प्रकार रेखांकन के भी विभिन्न प्रकार है जो निम्नलिखित हैं—

रेखांकन के प्रकार

1. स्वतन्त्र रेखांकन (Free drawing)

किसी वस्तु को देखने के पश्चात् मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव से उत्पन्न रेखांकन करना ही स्वतंत्र रेखांकन कहलाता है। यह प्रभाव एक चित्रकार का दूसरे चित्रकार से भिन्न होता है।

2. स्मृति रेखांकन (Memory drawing)

स्मृति रेखांकन के अन्तर्गत किसी आकृति को पूर्व परिचित रूप बिना देखे यथावत (ज्यों का त्यों) चित्रण करना होता है। जो स्मृति के आधार पर बनाया जाय।

3. प्रतिरूपात्मक रेखांकन (Representational- drawing)– इसमें जैसा हम देखते हैं, वैसा ही बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह रेखांकन दृष्टान्त चित्रों में उपयोगी है। इसमें रेखाओं की सहायता से छाया–प्रकाश, व दूरी–निकटता का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

4. यांत्रिक रेखांकन (Mechanical Drawing)

इस प्रकार की रेखायें यन्त्रों की सहायता से नपी तुली होती हैं। इनका कलात्मक प्रभाव नहीं होता, इनका प्रयोग केवल रूप के निर्माण में सहायता लेना होता है।

5. सीमान्त रेखांकन (Contour Drawing)

प्रकृति में अथवा वस्तु में अपनी कोई रेखा नहीं होती है बल्कि प्रकाश व अन्धकार के कारण रेखा का नियमन हो जाता है लेकिन ये केवल आकार बोधक रेखायें होती है।

6. सांकेतिक रेखांकन (Gesture Drawing)– यह प्रत्यक्ष चित्रण की ही एक विधा है। चित्र भूमि पर अन्तराल एवं वस्तु के आयतन को जानने मात्र के लिये इस अंकन पद्धति का सहारा लिया जाता है।

7. प्रकृति रेखांकन (Nature Drawing)

इसके अन्तर्गत पुष्प, पत्र तथा फल आदि की विशेषताओं का अंकन किया जाता है। पत्रों को ताजा तथा सुखा कर एक फल–फूल को काटकर भी अंकन करना चाहिए।

8. वस्तु रेखांकन (Object Drawing)– वस्तुओं के समूह को सामने रखकर उनका रेखांकन तथा परिप्रेक्ष्य का अध्ययन।

बोध प्रश्न

1. रेखा किसे कहते हैं ? इसके प्रकारों पर प्रकाश डालिये।
2. रेखा के प्रकारों व दृश्यगत प्रभावों का वर्णन करें।
3. चित्रकला में रेखा के महत्व पर प्रकाश डालें।

आकार प्रकार का ज्ञान

प्रमुख प्रशिक्षण बिन्दु

- भूमिका
- आकृति के प्रकार
- वर्गीकरण
- आकृति के प्रभाव
- महत्व

हमारे चारों ओर अनन्त रूपाकारों की उपस्थिति विद्यमान है। इनमें में कुछ रूपाकार हमारी सौन्दर्य चेतना से. जुड़ जाते हैं और हमारी स्मृति में चले जाते हैं। इन्हीं आकारों का सहारा लेकर चित्रकार समय–समय पर कला–सृजन करता रहता है। उदाहरणार्थ यदि इसके उतार–चढ़ाव में अन्तर करते जायं तो यही रेखा सर्प, केश अथवा रस्सी का आभास देगी। इसी प्रकार धरातलीय प्रभाव अथवा गठन से भी आकृति के स्वरूप और अवस्था में अन्तर आ जाता है।

चित्रसूत्र में आकृति के पाँच प्रकार माने गये हैं– हंस, भद्र, मालव्य, रचक और शशक

साधारणतया रूप का आकृति (आकार) के दो प्रकार माने गये हैं–

1. **नियमित (Symmetrical)**– जिसके दोनों भाग समान हों जैसे– वृत्त, घन, आयत, त्रिकोण गिलास आदि। नियमित आकारों में एकरसता तथा बौद्धिक सृजनता कम होती है।

2. **अनियमित (Asymmetrical)** अनियमित रूप का अर्द्ध भाग–शेष भाग से मिलता जुलता नहीं होता है जैसे– विषमकोण, चतुर्भुज, केटली, शंख आदि ये रूप अधिक रूचिकर होते हैं।

बोध प्रश्न

- आकार/आकृति को परिभाषित करें।
- आकृतियों के कितने प्रकार होते हैं।

क्रियाकलाप

रंगीन कार्डशीट के विभिन्न आकृतियों को काटकर कागज पर लगायें।

वर्गीकरण

किसी भी चित्र में निर्मित विभिन्न आकृतियों के दो भेद हैं–

1. सक्रिय आकृति, 2. सहायक आकृति

चित्रतल पर प्रमुख भूमिका निभाने वाली आकृतियों को सक्रिय आकृति कहते हैं। सक्रिय रूप को बल एवं महत्व प्रदान करने हेतु निर्मित अन्य आकृतियाँ सहायक आकृति कहलाती है।

चर्चा करें

- सक्रिय आकृति एवं सहायक आकृति में अन्तर स्पष्ट करें।

आकार/आकृति के प्रभाव

रेखाओं के प्रभाव के समान ही आकृतियों के भी प्रभाव होते हैं–

- चौकोर और आयताकार रूपों में स्थिरता और शान्ति होती है।
- गोलाकार रूपों में लयात्मकता होती है।
- त्रिभुजाकार रूपों में निरन्तरता, विकास व ऊर्जा का संकेत मिलता है।
- विलोम त्रिभुजाकार आकृतियों से अशान्ति तथा लिप्तता का प्रतीकात्मक बोध होता है।
- अण्डाकार अथवा दीर्घ वृत्ताकार रूप लावण्य सृजनशीलता और प्रसार का प्रभाव उत्पन्न करती है।
- टेढ़े–मेढ़े रूपों से अस्थिरता अनिश्चितता, चंचलता व्याकुलता आदि व्यक्त होते हैं।

गतिविधि/क्रियाकलाप

स्वयं करें– प्रशिक्षु सरल रेखाओं द्वारा वृत्ताकार आकृति, अण्डाकार आकृति एवं आयत बनाए एवं उसके प्रभाव को समझें।

चर्चा करें–*चौकोर एवं त्रिभुजाकार आकृतियों के प्रभाव के बारे में चर्चा करें।*

आकार/आकृति का महत्व

चित्रभूमि में अंकन को प्रारम्भ करते ही रूप का निर्माण भी प्रारम्भ हो जाता है। इसलिये हम कह सकते हैं कि कला, रूपाकारों की ही भाषा है और विभिन्न रूपाकारों की समवेत उपस्थिति कलारूपी चित्रात्मक भाषा को जन्म देती है। कला की ये परिभाषा विभिन्न कला–तत्वों में रूप की महत्वपूर्ण उपस्थिति रेखांकित करती हैं। अतः रूपप्रद कलाओं का अस्तित्व रूपाकारों की रचना और उनके व्यवस्थित विकास पर ही निर्भर है।

मूल्यांकन

1. क्या आकार अथवा रूप के बिना भावों की अभिव्यक्ति संभव है ? अपने विचार व्यक्त करें।
2. आकृति क्या है ? उसका वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है ?
3. विभिन्न आकारों के दृश्यगत प्रभाव पर प्रकाश डालें।

हस्तकला

प्रशिक्षण बिन्दु

- हस्तकला की अवधारणा
- क्रियात्मक विधियाँ
- हस्त कौशल की विशेषताएँ

कला एक क्रियात्मक विषय है। इसमें प्रत्येक कार्य क्रियात्मक होता है क्योंकि हृदय और मन के भाव बुद्धि से मेल खाकर हस्त कौशल द्वारा अभिव्यक्ति होते हैं। छात्र स्वभावतः कुछ न कुछ करना चाहता है। यह प्रवृत्ति छात्र को आन्तरिक दृष्टि से प्रेरित करती रहती है कि वह कुछ क्रिया और सृजन करें। इस प्रकार जब छात्र किसी निर्माण के कार्य में लगता है तो कल्पना का सहारा लेकर उसमें आत्माभिव्यक्ति का पुट अवश्य देता है। विद्यालय की कला शिक्षा, स्थानीय लोक कला, शिल्पकला तथा लोक रंगमंच के समीप है।

सृजनात्मक कला के कार्यक्रमों में छात्र सहज भाव से खेल–खेल में विभिन्न कलाकृतियाँ बनाते हैं जिनसे वे अपने प्रतिदिन के अनुभवों को विभिन्न प्रकार के माध्यमों और सामग्री से व्यक्त करता है। इसके द्वारा अपनी भावनाओं, विचारों, भावों और कल्पनाओं को मूर्त रूप देता है। छात्र कागज, गत्ते, लकड़ी, मिट्टी और चर्म के माध्यम से कोई न कोई उपयोगी वस्तु बनाने का प्रयास करता है। छात्र चित्रण कार्य करते–करते ऊब जाता है। उनकी मनोदशा बदलने के लिये अन्य कार्य खोजने पड़ते हैं। उदाहरणतः कागज मोड़ना, काटना और चिपकाना, गत्ते को काटकर कोई वस्तु बनाना, मॉडल बनाना, मिट्टी के द्वारा आकृतियाँ बनाना, लकड़ी, चमड़े, पत्थर या मिट्टी से मूर्ति बनाना आदि क्रियायें क्रियाशीलता प्रदान करती हैं। अतः इन्ही क्रियात्मक कार्यों द्वारा कला का अध्ययन कराना क्रियात्मक विधि कहलाती है–

बोध प्रश्न–

- हस्तकला की अवधारणा स्पष्ट करें।
- हस्तकला के द्वारा हम किन–किन उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर सकते हैं?

1. कागज का कार्य– इस क्रिया में कागज रंगना, अबरी बनाना, कागज मोड़ना, कागज काटना तथा कागज चिपकाना आदि क्रियायें आती हैं। कागज रंगने की विविध क्रियाओं में स्प्रे, स्टेन्सिल, छपायी तथा रंगों में डुबोना आदि क्रियाओं आती हैं। कागज काटने, मोड़ने और चिपकाने की क्रियाओं द्वारा विविध प्रकार की वस्तुएँ, फाइलें, पैड, लिफाफे, पुस्तक संकेत– (थैले) फूल तथा बेलें आदि वस्तुएँ बनायी जा सकती हैं।

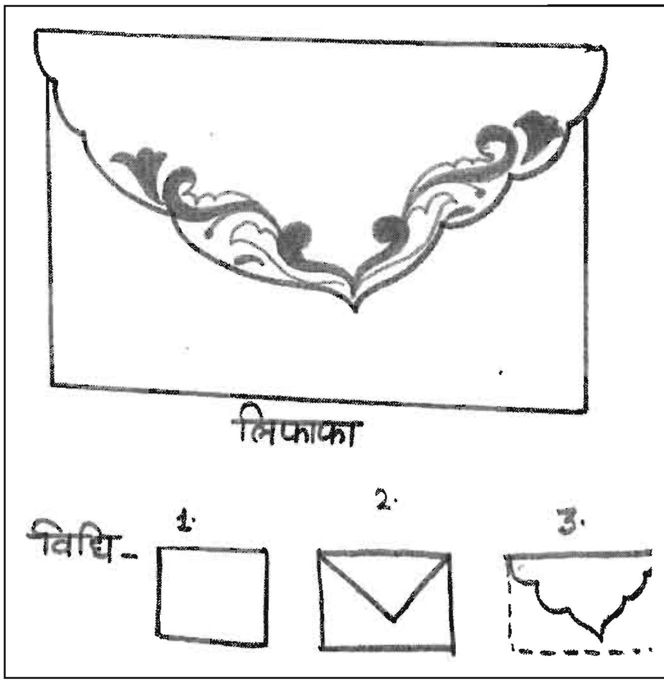

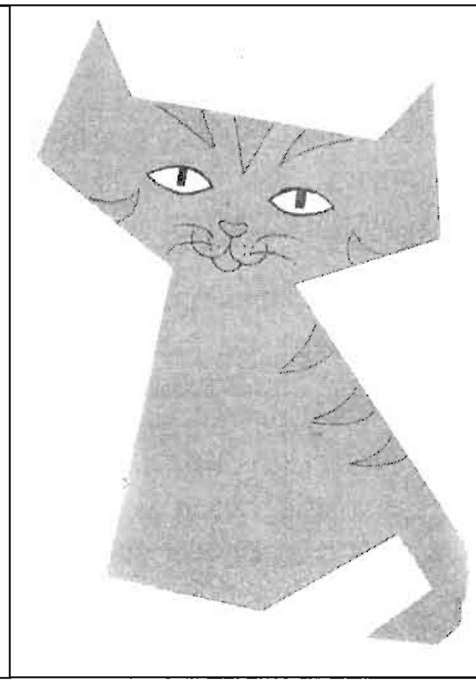

2. गत्ते का कार्य– गत्ते को मोड़कर और काटकर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का प्रतिरूप जैसे– बॉक्स, डिब्बे, खोल, जिल्दें, नोटबुक एवं फाइलें आदि बनाने वाली क्रियाऐं कराकर इनका कलात्मक ज्ञान इनसे सह–सम्बन्धित रूप में दिया जाता है।

3. मिट्टी का कार्य– मुलायम चिकनी मिट्टी द्वारा मॉडल बनाना बर्तन बनाना और उन्हें पकाना तथा रंगकर सजाना कलात्मक क्रियाओं का एक भाग होता है। अपनी इच्छानुसार मिट्टी को परिवर्तित किया जा सकता है। यह कार्य छात्रों को रूचिकर और सरल प्रतीत होता है।

4. चर्म कार्य– चर्म द्वारा विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनायी जाती है, जैसे– पर्स, बैग और पेटी आदि। चमड़ा मूल्यवान होता है। इस कारण इसका कार्य उच्च कक्षाओं में ही कराया जाता है।

5. लकड़ी और धातु के कार्य– लकड़ी एवं धातु के कार्यों में अधिक बल और कुशलता की आवश्यकता होती है। इसलिये ये कार्य उच्च कक्षाओं के लिये उपयोगी है।

6. कृषि सम्बन्धी कार्य तथा बागवानी– कला के अध्ययन में प्रकृति का अध्ययन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रकृति की गोद में जो कुछ देखा जाता है, उसका चित्रण और ज्ञान इस कृषि के अन्तर्गत आता है।

7. गृहशिल्प के कार्य– छात्राओं के लिये यह कार्य उपयुक्त और उपयोगी होता है। कपड़े काटने, छाँटने, काढ़ने तथा बुनने आदि की क्रियाएँ गृह शिल्प में आती है।

चर्चा करें–

- क्रियात्मक कार्यों में कागज व गत्ते के कार्यों के द्वारा कौन–कौन सी वस्तुयें तैयार कर सकते हैं ?
- छात्राओं के लिये गृह–शिल्प का क्या महत्व है?

बोध प्रश्न*–कला के अध्ययन में कृषि सम्बन्धी कार्यों का क्या महत्व है ?*

हस्तकौशल की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति करना।
- निश्चित रूप और आकार देना।
- शिल्प कार्य और हस्त कौशल का एक–दूसरे पर आश्रित रहना।
- सभी शिल्प (हस्त कौशल) समान रूप से आवश्यकता पूरक हैं।
- शिल्प की एक निश्चित शैली होती है, जिसे सीखना आवश्यक है।
- हस्त कौशल अथवा शिल्प में स्थिरता होना
- शिल्प में स्वतन्त्र भाव प्रकाशन को स्थान नहीं ।
- प्रारम्भिक कार्य प्रणाली के ज्ञान के बिना शिल्प निर्मित नहीं होता।

प्रश्न–

- हस्तकला से आप क्या समझते हैं ?
- हस्तकला की विधियों का वर्णन करें।
- हस्तकौशल की कौन–कौन सी विशेषताएँ है? स्पष्ट करें।

अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण/कोलाज

प्रशिक्षण बिन्दु

- कोलाज की अवधारणा
- कोलाज के प्रकार
- कोलाज की विधि
- कोलाज के लाभ

"विभिन्न अनुपयोगी वस्तुएँ या कागज को गोंद, फैवीकॉल तथा अन्य चिपकाने योग्य पदार्थ से कोई कलात्मक आकार या रूप प्रदान करना ही कोलाज है।" इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के कागज़, कपड़े, तीलियाँ, माचिस, सिगरेट की डिब्बियाँ टूटे हुये विभिन्न काँच, मिट्टी की वस्तुएँ तथा अन्य अनुपयोगी वस्तुएँ आती हैं। इन सब को गोंद, फैवीकॉल अथवा अन्य चिपकाने योग्य पदार्थ से चिपकाकर लगाकर, उभारकर अपनी इच्छानुसार अन्तराल में इस प्रकार संयोजित किया जाय कि किसी प्रकार के कलात्मक रूप की अभिव्यक्ति हो सके। इसे ही कोलाज का नाम दिया गया है। यह आधुनिक कला की एक प्रचलित शैली है। बच्चे पारम्परिक सामग्री (रंगीन कागज, मुद्रित सामग्री) आदि से कोलाज बनाते रहे हैं, किन्तु उन्हें प्रकृति की वस्तुओं जैसे पंख पत्तियों, टीन ढक्कन खाली डिब्बे, रंगीन धागे, तिनके आदि के उपयोग की जानकारी दी जाय। इस प्रयोजन के लिये चुनी गयी सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो कागज की सतह पर आसानी से चिपक सके।

बोध प्रश्न

- कोलाज का क्या तात्पर्य हैं।
- कोलाज से हमें क्या लाभ है ? स्पष्ट करें।

कोलाज दो प्रकार के होते हैं–

(1) पेपर कोलाज (2) मिश्रित कोलाज

पेपर कोलाज और इसके बनाने की प्रक्रिया

सभी प्रकार के रंगीन व सादे कागज के द्वारा पेपर कोलाज बनाया जाता है। कागजों को गोंद या फैवीकॉल से चिपकाकर कलात्मक रूप प्रदान किया जाता है। इस प्रकार के कलात्मक रूपों के लिये पूर्व में विचार कर हम कोई भी डिजाइन (आलेखन) मानवाकृति, पशु–पक्षी, प्रकृति आदि को कागज के छोटे–छोटे टुकड़ों द्वारा बना सकते हैं। दूसरे प्रकार के पेपर कोलाज के लिये बड़े–बड़े आकार के कागजों को चिपकाकर कोई भी आधुनिक कला का रूप भी सृजित किया जा सकता है।

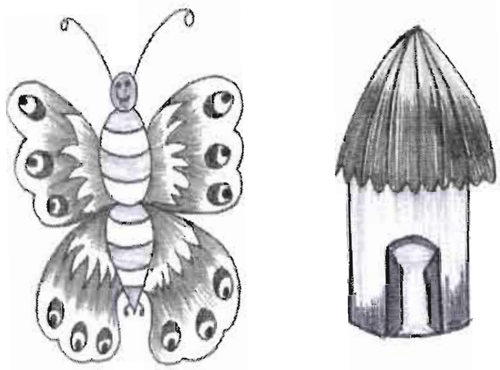

पेपर कटिंग द्वारा बनी हुई तितली एवं झोपड़ी

रंगीन कागज द्वारा बना हुआ लैम्प

स्वयं करें

- रंगीन कागजों को चिपकाकर कोई सुन्दर आकृति बनायें।
- पेपर कोलाज बनाने की प्रक्रिया स्पष्ट करें।

2. मिश्रित कोलाज और इसको बनाने की प्रक्रिया

मिश्रित कोलाज में हम कागजों के साथ अन्य अनुपयोगी वस्तुयें मिलाकर, चिपकाकर एवं जोड़कर विभिन्न अनुपयोगी वस्तुओं को कलात्मक रूप प्रदान कर सकते हैं। लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़ों को रंगकर, जैसे– शीशा, आइसक्रीम की चम्मच, शीशी के ढक्कनों को इस प्रकार संयोजित करना कि कोई विशेष रूप का सृजन हो सके वह मिश्रित कोलाज के अन्तर्गत आता है। इसमें विभिन्न प्रकार की प्लास्टिक की वस्तुएँ और मोमजमा के थैले, धागे, ऊन, चिपकाया अथवा जोड़ा जा सकता है।

इसमें भी संयोजन की बहुत सम्भावनाएँ हैं कोलाज कई प्रकार से बनाये जा सकते हैं। जैसे– चित्र नं01 चित्र नं02 चित्र नं03

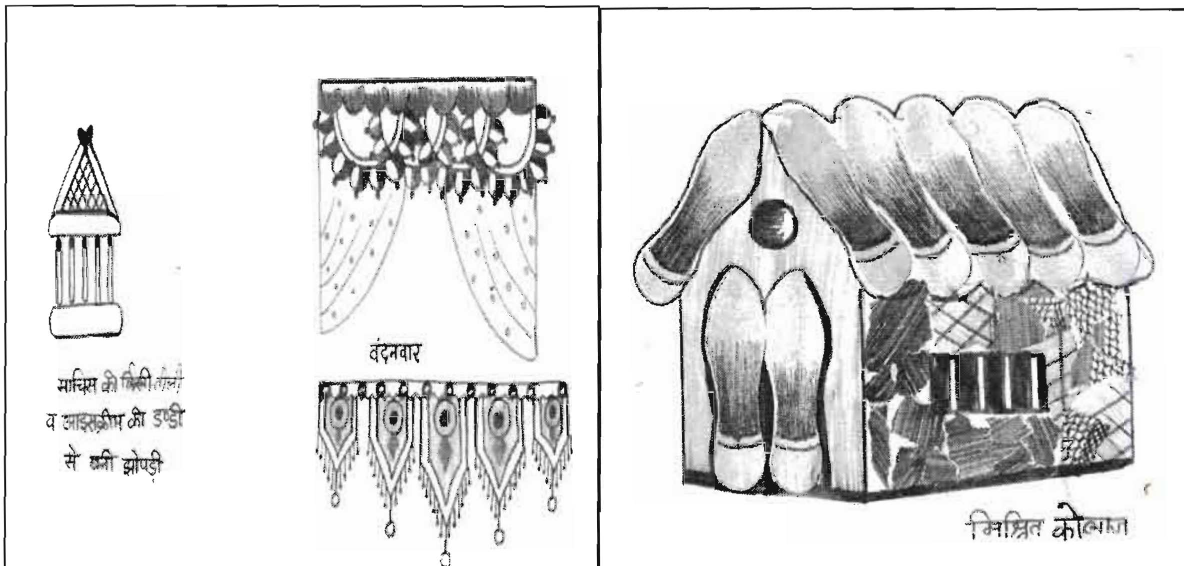

विभिन्न अनुपयोगी वस्तुओं से बना मिश्रित कोलाज

इन्हें जानें

- मिश्रित कोलाज क्या है?
- मिश्रित कोलाज के द्वारा कोई कलात्मक वस्तु के निर्माण करें।

मूल्यांकन प्रश्न

1. कोलाज से आप क्या समझते है ? विस्तार पूर्वक लिखें।
2. कोलाज के प्रकार बतायें एवं किसी एक प्रकार की विधि का वर्णन करें।

मिट्टी के खिलौने बनवाना

- मिट्टी की जानकारी
- मिट्टी तैयार करने की विधि
- मिट्टी पकाने की विधि
- मिट्टी के खिलौनों को सजाने की विधि
- मिट्टी के औजार

बालकों की रूचि मिट्टी में स्वाभाविक रूप से होती है और बच्चे मिट्टी में तरह–तरह से खेलते है। मिट्टी के खिलौनें बनाना बच्चों को बहुत अधिक रूचिकर लगता है। यदि बालकों को इस सन्दर्भ में थोड़ा जानकारी मिल जाये तो उनके अन्दर छिपी मृणमूर्ति कला उभर कर स्पष्ट हो जायेगी।

सर्वप्रथम तो मिट्टी के खिलौने बनाने के लिये सबसे उपयुक्त चिकनी मिट्टी समझी जाती है। केवल चिकनी मिट्टी ही नहीं वरन् कार्य के लिये उपयुक्त मिट्टी कंकड़ आदि से रहित होनी चाहिए।

बोध प्रश्न– *खिलौने/बर्तनों को बनाने के लिये किस प्रकार की मिट्टी उपयुक्त होती हैं ? स्पष्ट करें।*

मिट्टी तैयार करने की विधि

मिट्टी को तैयार करने की सरल विधि यह है कि पहले मिट्टी मुंगरी से कूट–कूट कर महीन करके छलनी से छान लें एवं छनी हुई मिट्टी को पानी में भिगो दें। कम से कम दो तीन घण्टे पानी में भिगों कर आँटे की तरह गूंथ कर मिट्टी को तैयार कर लें। यदि मिट्टी लसदार न हो, तो गोंद के पानी में भिगोना उपयुक्त होगा। मिट्टी के मथने का काम लोहे के किनारेदार तसले में किया जा सकता है। मिट्टी बहुत अधिक चिकनी होने पर उसमें बर्तनों की पिसी हुई मिट्टी भूसा या रूई मिलाकर काम में लाया जाना चाहिए।

चर्चा करें– *मिट्टी तैयार करने की विधियाँ बताएं।*

मिट्टी के खिलौनें/बर्तन तैयार करने की विधियाँ– मिट्टी के बर्तनों को तैयार करने में कई विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं–

1. बत्ती या कुण्डली प्रणाली

बत्ती की सहायता से बर्तन बनाना बहुत ही सरल है। इस प्रणाली से अपनी मनपसन्द की आकृति और आकार की चीजें बनाने में सुविधा रहती है। बत्ती द्वारा बर्तन बनाने के लिये किसी भी प्रकार की मिट्टी काम में लाई जा सकती है, किन्तु मिट्टी अवश्य लसदार होनी चाहिये। जब बत्ती तैयार हो जाय तो उस तली (पेंदी) किनारे पर रखकर अन्दर और बाहर उँगलियों की सहायता से जोड़ते जायें। कुण्डली प्रणाली मिट्टी के बर्तन बनाने की सबसे उत्तम विधि है, क्योंकि इस प्रणाली द्वारा मनचाहे शक्ल एवं आकार का बर्तन बनाया जा सकता है। इस विधि द्वारा छोटे से लेकर बड़े बर्तन

हाँडी, गमले, चायदानी आदि सरलता से बनाये जा सकते हैं। अतः कुण्डली विधि अन्य विधियों से उत्तम है।

2. ठोस आकार वाली विधि

इस विधि से छोटे बर्तन जिनकी ऊँचाई लगभग 10 से 15 सेमी की हो बनाये जा सकते हैं। ठोस मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये उत्तम लसदार मिट्टी लेकर बर्तन की तली एवं गर्दन को छोड़कर बाकी हिस्सा बना लिया जाता है। इतना काम हो जाने के बाद उसको कुछ समय के लिये सूखने दें। कुछ सूख जाने के बाद अन्दर की मिट्टी मुड़े हुये तार या धातु की पत्ती से धीरे–धीरे निकाल देनी चाहिए। मिट्टी निकालते समय यह ध्यान रखना है कि बर्तन टूटने न पायें। टूटने से बचाने के लिये बर्तन के चारों ओर भींगा कपड़ा बाँध देना उचित होगा। इसके बाद बर्तन की तली, मुँह, गर्दन, ढक्कन आदि जोड़ लेना चाहिए। इस विधि से कलमदान, फूलदान, प्याली, खिलौने आदि बनाये जा सकते हैं।

3. साँचे द्वारा मिट्टी के खिलौने बनाने की विधि

साँचे द्वारा खिलौने बनाने की विधि पुराने जमाने से चली आ रही है। इस विधि द्वारा खिलौने जल्दी बनते हैं और एक ही नाप के बनते हैं। इस विधि में पहले विभिन्न खिलौने के साँचे तैयार कर लेते हैं। जिस खिलौने को बनाना हो उसका पहले दो टुकड़ों में साँचा तैयार कर लेना चाहिए। फिर अच्छी प्रकार तैयार की हुयी मिट्टी की समान मोटाई एवं आकार की दो साफ और चिकनी पटिट्याँ रखकर इस प्रकार दबाते हैं कि मिट्टी साँचें में सभी जगह एक सी बैठ जाय।

4. अँगूठे वाली विधि

इस विधि की सहायता से केवल छोटे–छोटे बर्तन एवं खिलौने हम अपने अँगूठे और उँगलियों की सहायता से बना सकते हैं। इस विधि से हमें अपनी उँगलियों से जोड़कर शक्ल बनानी पड़ती है। यह मिट्टी के काम का मुख्य तरीका है। इस प्रकार वस्तु में सौन्दर्यता पैदा की जा सकती है।

इन्हें जानें एवं प्रयोग करें– *मिट्टी के खिलौने बनाने की कोई दो विधियों का प्रयोग करके उसका चित्रांकन करें।*

मिट्टी के बर्तन पकाने की विधि

किसी निश्चित स्थान पर गोल आकृति का एक गड्ढा बना कर उसकी तह को टूटे बर्तनों से ढँक देना चाहिए। तत्पश्चात् सूखे पत्ते उस पर बिछा कर उपलों की पर्त रख कर छोटे बड़े सभी बर्तनों को सजाकर उपलों को पूरी तरह से उस पर रख कर गीली मिट्टी का लेप लगा दिया जाता है। लेप में छेद छोड़ा जाता है। इसमें आग जलाने के बाद कम से कम तीन दिन के लिये छोड़ दें। इतने समय के बाद पके हुये बर्तनों को निकालकर काम में लाया जाता है।

मिट्टी के बर्तनों/खिलौनो को सजाना

पके हुये बर्तनों या खिलौनों के सौन्दर्य को बढ़ाने और अन्तिम रूप देने के लिये रंग करना आवश्यक है। पहले बर्तनों/खिलौनों को (Sand paper) से घिस कर उन्हें चिकना कर ले उसके पश्चात् खड़िया का अस्तर चढ़ा लेते हैं। मिट्टी के रंग बाजार से लाकर उसे रंग देते हैं। अधिक स्थाई और चमकदार बनाने के लिये एनेमेल पेन्ट से भी सजाया जा सकता है।

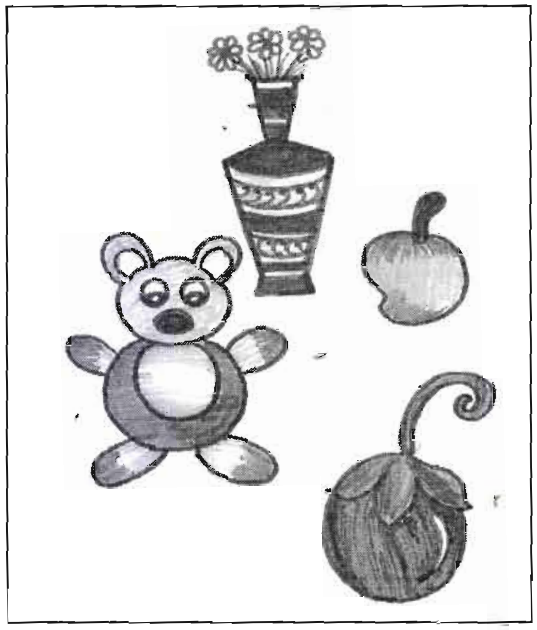

बोध प्रश्न

- मिट्टी के बर्तन/खिलौने पकाने की विधि का वर्णन करें।
- मिट्टी के बर्तन/खिलौने किस प्रकार सजा सकते हैं ? समझाइये।

मिट्टी के काम करने के औजार

मिट्टी के काम के लिये हाथ की उँगलियाँ ही मुख्य औजार है इसके अतिरिक्त कुछ साधारण औजारों की आवश्यकता पड़ती है जो निम्नलिखित है--

1. लकड़ी का मुँगरी
2. मिट्टी की नाँद
3. लोहे का तसला
4. पैमाना
5. मुड़ा हुआ तार
6. पटरी
7. तारों की चलनी
8. स्पंज का टुकड़ा
9. लकड़ी के कलम
10. परकार

बोध प्रश्न– *मिट्टी को तैयार करने के लिये हमें किन–किन औजार की आवश्यकता होती है ?*

- बत्ती व कुण्डली प्रणाली से क्या समझते है ? स्पष्ट करें।
- मिट्टी के कार्य की बाल कला में उपयोगिता बताइये।
- आप मिट्टी के कौन–कौन से खिलौने बना सकते हैं ? किसी एक बर्तन/खिलौने पर डिजाइन बनाकर उसकी विधियाँ लिखें।

चित्रकला

चित्रकला सत्यम् शिवम् तथा सुन्दरम् के अभूतपूर्व सम्मिलन का अमृत है जो मानव जीवन में [redacted] विशेष स्थान है। बालक में स्वाभाविक विकास हेतु शिक्षा में चित्रकला एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती है। जहाँ कला का अभाव है वहाँ जीवन निःसार है। ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना उसका यह संसार है और उसमें मानव सर्वोपरि है, जिस पर वस्तु के सौन्दर्य का गहरा प्रभाव पड़ता है। चित्रकार उस वस्तु को विभिन्न रंगों और रेखाओं के माध्यम से सरस और सजीव कर देता है। जब वह वस्तु तूलिका व रंगों के माध्यम से कोई विशेष स्वरूप व आकार को धारण करती है तो यह कृति चित्रकला कहलाती है।

चर्चा करें– *चित्रकला एक अनिवार्य विषय है। स्पष्ट करें।*

महत्व

चित्रकला का जीवन में अत्यन्त महत्व है। चित्रकला सभी ललित कलाओं, मूर्तिकला, भवन निर्माण कला, संगीत नृत्य सबसे अधिक श्रेष्ठ है और साथ ही यह उपयोगी कला भी है जो मानव [redacted]

ये कलायें चित्रकला के सहयोग के अभाव में सर्वसुलभ सर्वग्राह्य नहीं हो पायेंगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में और प्रत्येक क्रिया–कलाप में चित्रकला का गहरा नाता है। हमारे रीतिरिवाज, धर्म–कर्म, विवाहोत्सव, धर्म सम्बन्धी कार्यक्रमों में चित्रों की आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त साहित्य, संस्कृति, भौतिक विज्ञान, रसायनविज्ञान, भूगोल, इतिहास आदि जो भी विषय हैं, वे रंगों व रेखाओं के माध्यम से ही पूर्ण होते हैं। अतः चित्रकला को आज की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

बोध प्रश्न– *चित्रकला के महत्व पर संक्षेप में प्रकाश डालें।*

आकार हमारे जीवन में इस प्रकार रम गये हैं कि उन्हें अलग करना संभव नहीं है। यदि जीवन में 'सुन्दर' समाप्त हो जाय तो उसका स्वरूप ही बदल [redacted] कला की दशा की कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं।

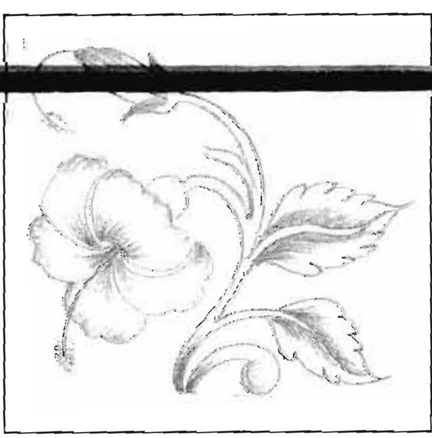

आलेखन के प्रकार– डिजाइन पाँच प्रकार के होते हैं–

1. प्राकृतिक– जो डिजाइन प्राकृतिक वस्तुओं द्वारा तैयार किये जाते हैं। वह प्राकृतिक डिजाइन कहलाते हैं।

2. अलंकारिक डिजाइन– जो डिजाइन प्राकृतिक वस्तुओं को तोड़–मरोड़ या वास्तविक रूप से थोड़ा अलंकृत स्वरूप दिया जाय उसे अलंकारिक डिजाइन कहते हैं।

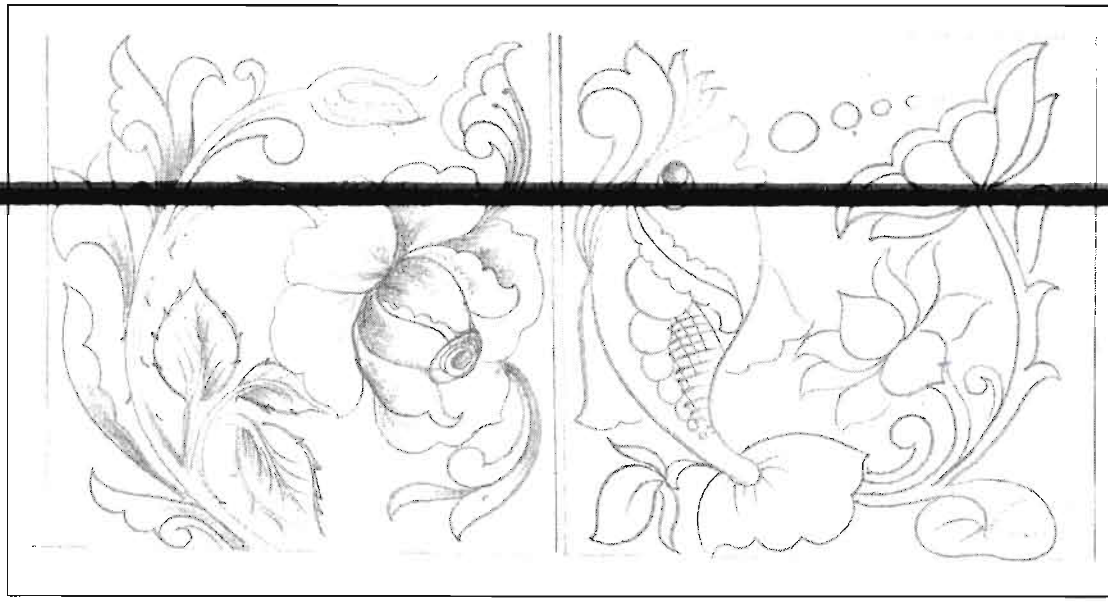

3. ज्यामितीय– जो आलेखन पैमाने, परकार आदि यंत्रों द्वारा सीधी तथा वक्र रेखाओं द्वारा [redacted] जाते हैं वह ज्यामितीय आलेखन कहलाते हैं।

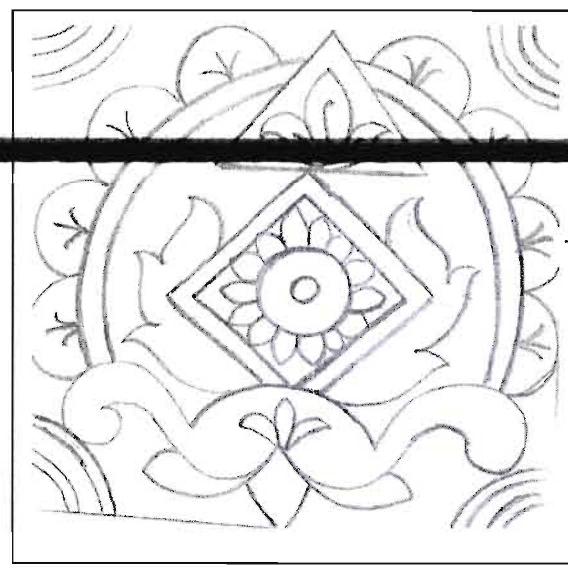

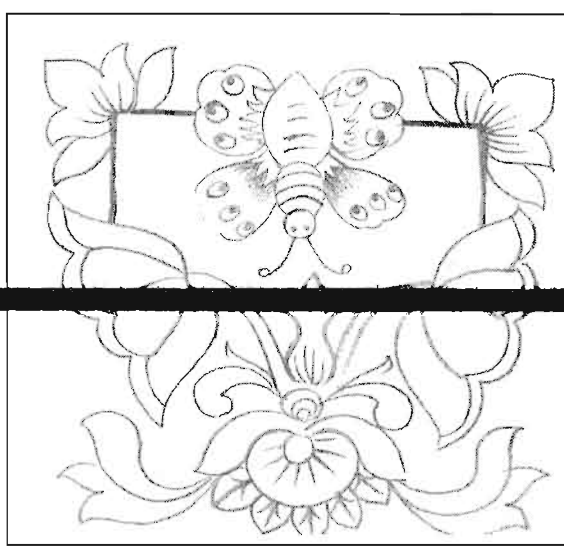

4. सूक्ष्म डिजाइन– जो डिजाइन वृत्त, सरल [redacted] सन्तुलन रखकर विशेष प्रकार से तैयार किये जाते हैं।

5. मिश्रित डिजाइन– जो डिजाइन प्राकृतिक और अन्य वस्तुओं को मिला जुलाकर तैयार किये जाते हैं वे मिश्रित डिजाइन कहलाते हैं।

चित्रकला के उद्देश्य

- बालकों में कल्पना शक्ति व बौद्धिक विकास करना।
- उनकी प्रतिभा व प्राकृतिक प्रवृत्तियों का विकास करना।
- बालकों में सौन्दर्यानुभूति का आभास कराना।
- स्वतन्त्र भावाभिव्यक्ति की योग्यता व क्षमता का विकास करना।
- भौतिक जीवन को सुखमय बनाना।
- सहयोग व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।

बोध प्रश्न

- आलेखन कितने प्रकार के होते हैं ?
- चित्रकला के उद्देश्यों का वर्णन करें।

स्वयं बनायें*– एक वर्ग बनाकर सुन्दर पुष्प व पत्तियों से सजाकर रंग भरें।*

चित्रकला सामग्री

अपने हृदय के भावों को तूलिका द्वारा चित्र रूप में प्रस्तुत करना ही चित्रकला है। चित्रकला में अनेकों प्रकार की आकृतियों को पेंसिल, ब्रुश तथा रंगों की सहायता से दर्शाया जाता है। चित्रण सामग्री के रूप में छात्रों को निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

जैसे–

1. ड्राइंग कागज

2. [illegible]

3. पेंसिल– छात्रों के पास चित्रांकन करने के लिये HB तथा 2B की पेंसिले (मुक्त हस्त चित्रण के लिये) होनी चाहिये। केवल ज्यामितीय कला के लिये H या 2 H पेंसिल की आवश्यकता होती है।

4. रबर– छात्रों के लिये मुलायम रबर होना चाहिए। इस काम के लिये Venus या Sandaw या कोई भी अच्छा रबर होना चाहिए।

5. ब्रुश–चित्रकला के लिये ब्रुश का होना आवश्यक है प्रत्येक छात्रों के पास कम से कम तीन ब्रुशों का होना आवश्यक है। ये ब्रुश नं० 1, 3 व 4 के होने चाहिए। अच्छे तथा नुकीले ब्रुश का प्रयोग करना चाहिए।

6. रंग– चित्रकला में जलरंग, पेंसिल रंग, पेस्टल रंग तथा तेलरंग आदि का प्रयोग किया जाता है। इन चीजों के अलावा और भी बहुत सी चीजें है, जिनकी आवश्यकता चित्रांकन के समय पड़ती है किन्तु प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिये इतना ही जानना पर्याप्त है।

बोध प्रश्न– *चित्रकला में प्रयोग होने वाली आवश्यक सामग्रियों का वर्णन करें।*

चित्र बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- चित्रकला में सफाई का विशेष महत्व है। अतः अपने हाथ साफ करके तभी चित्र बनाए।
- अपने साथ कला–सम्बन्धी सभी सामान लेकर बैठना चाहिये, जैसे– पेंसिल रबर, ड्राइंग कागज, रंग, पानी तथा साफ कपड़ा आदि।
- चित्र बनाते समय अधिक न झुके तथा अपनी मेज को सीधा रखें।
- पहले चित्र को एच०वी० पेंसिल से हल्की लाइनों से बनायें, सही चित्र बन जाने पर उसे थोड़ा सा गहरा कर दें।
- पेंसिल की नोक बारीक हो तथा मुलायम रबर का ही प्रयोग करना चाहिए।
- प्रत्येक चित्र को अपने ड्राइंग कागज के बीच में बनाना चाहिए।
- रंग भरते समय स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।
- चित्र बनाते समय सबसे पहले उसकी बाहरी रेखाओं को बनाना चाहिए।

- रंग का प्रयोग करते समय ब्रुश साफ रखे। बिना धोये दूसरे रंग का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
- रंग भरने के पश्चात् चित्र को धूप में नहीं रखना चाहिए ताकि चित्रों की चमक कम न हो।

__ध्यान दें__– चित्र बनाते समय किन–किन विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है।

मूल्यांकन प्रश्न

- कला के माध्यम से हम अपने भावों को कैसे अभिव्यक्त कर सकते हैं ? स्पष्ट करें।
- चित्रकला के किन्ही चार उद्देश्यों को स्पष्ट करें।
- चित्रकला में रंगों का क्या महत्व है ?
- अलंकारिक आलेखन से आप क्या समझते हैं।

प्रोजेक्ट कार्य

लोक कला जन साधारण की भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। 'लोक' शब्द को प्रतिबिम्बित करने वाली यह कला इसी मानव समूह की भावनाओं का सहज प्रतिरूप है जो उसकी सौन्दर्यानुभूति और मांगलिक भावनाओं के प्रतीक रूप में अधिव्यक्त होती रही है। लोक–मानस के हृदय की सरलता व सुबोधता लोक कला के प्राण हैं। इस प्रकार लोक–कला किसी माध्यम विशेष में बंधी नहीं रहती और लोक–कलाकार आकृति, माध्यम तथा तकनीक की दृष्टि से पूर्ण स्वत्रंत होता है। पर्व त्योहारों तथा विवाह आदि के समय मंगलमय चिन्हों को दीवारों तथा आँगनों पर अंकित करने की प्रथा बहुत प्राचीन है।

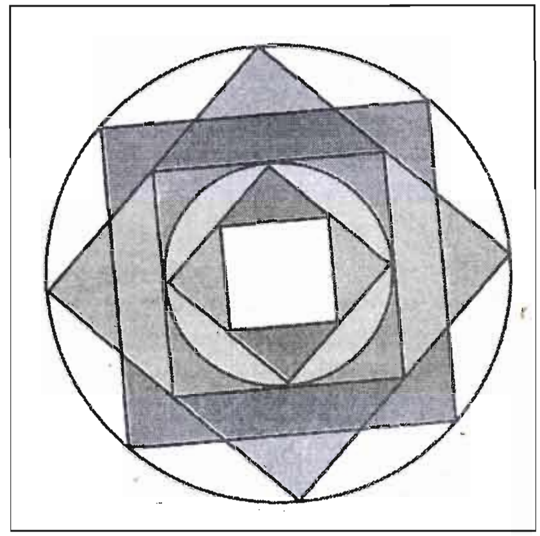

इन भूमि अलंकरणों को महाराष्ट्र में ''रंगोली'' गुजरात में ''साथिया'' राजस्थान में ''माँडया'' उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में ''सोन रखना'' और कुछ में ''चौक पूरना'' अल्मोड़ा तथा गढ़वाल में ''आपना'' बिहार में ''अहदन'' और बंगाल में ''अल्पना'' कहा जाता हैं।

प्रश्न– लोक कलाओं से आप क्या समझते हैं?

इसी प्रकार राजस्थान में ''मेंहदी'' मांडने की प्रथा भी बहुत प्रचलित है। प्रत्येक त्योहार, उत्सव तथा ऋतु पर्वों में वहाँ स्त्रियाँ मेंहदी मांडती हैं।

बोध प्रश्न– मेंहदी किन–किन पर्वों पर लगाई जाती हैं ?

2. मेंहदी का एक चित्र प्रस्तुत करें।

स्प्रे सजावट

जो चित्र छींटे द्वारा बनाये जाते हैं, उनकों स्प्रे चित्रण या स्प्रे कार्य कहते है स्प्रे से कार्य करने की दो विधियाँ हैं–

1. स्प्रेयर द्वारा चित्र
2. कंघे और ब्रुश द्वारा स्प्रे करना

स्प्रे कार्य करने के लिये सर्वप्रथम किसी मोटे कागज पर इच्छानुसार आलेखन काट लेते हैं। इसके बाद किसी समतल मेज या ड्राइंग बोर्ड पर छापने वाले कागज के ऊपर कटी हुयी आलेखन इकाई को मोम या आलपिन की सहायता से चिपका देते हैं। इसके बाद ब्रुश या स्प्रेयर की सहायता से छींटे डालते हैं। सम्पूर्ण कागज पर छींटे डालने के पश्चात् ऊपर की आलेखन इकाई को सावधानी से

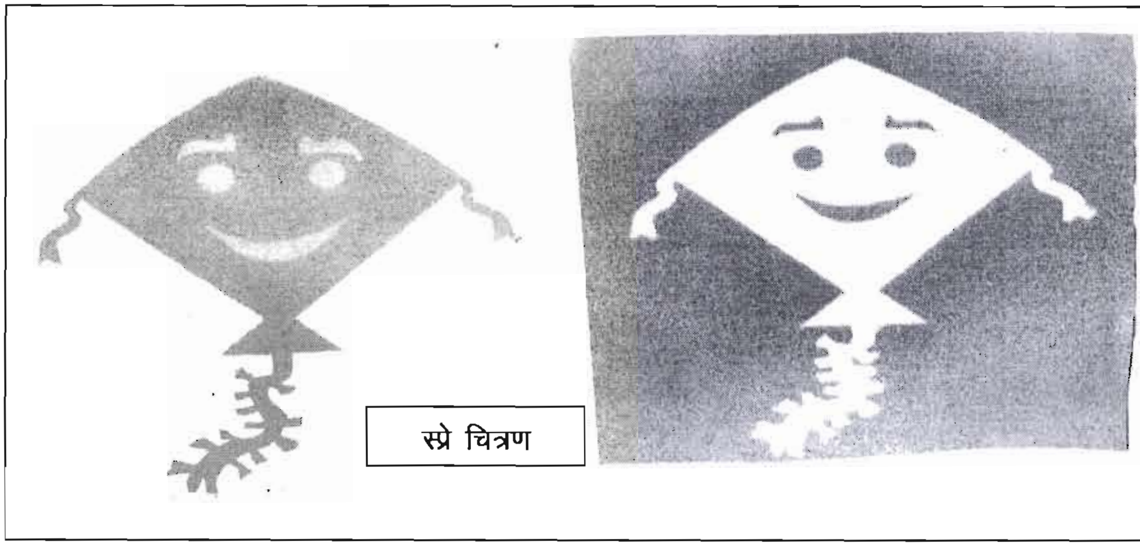

स्प्रे चित्रण

हटा लेते हैं। इस प्रकार ब्रुश तथा स्प्रेपर की सहायता से किया गया कार्य स्प्रे कार्य किया जाता है।

बोध प्रश्न एवं चित्रण करें–

1. स्प्रे कार्य से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट करें।
2. किसी एक चित्र का निर्माण स्प्रे द्वारा करें।

मुखौटे एवं कठपुतलियाँ

बच्चे, चेहरे पर लगे बनावटी कागज के मुखौटे, काठ एवं कपड़े की बनी कठपुतलियों का खेल को देखकर बहुत प्रसन्न और आकर्षित होते हैं। कठपुतलियाँ हमारे देश की प्राचीन लोककला को विकसित करने में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रही हैं। ये कठपुतलियाँ काठ, कुट्टी और कपड़े की बनी होती हैं। तार धागे और हाथ से इनका संचालन किया जाता है। मुखौटे एवं कठपुतलियों कई प्रकार से बनाई जाती हैं–

1. कागजी मुखौटे
2. कुट्टी के मुखौटे
3. रबड़ एवं प्लास्टिक के मुखौटे

4. दस्ताना कठपुतली
5. छड़ी कठपुतली
6. रूमाल कठपुतली

बोध प्रश्न– मुखौटे एवं कठपुतलियाँ हमारे जीवन में क्या महत्व रखती हैं ?

ठप्पे बनाना

सबसे पहले एक बड़ा आलू लेते हैं, फिर चाकू की सहायता से उसे दो भागों में विभाजित करते

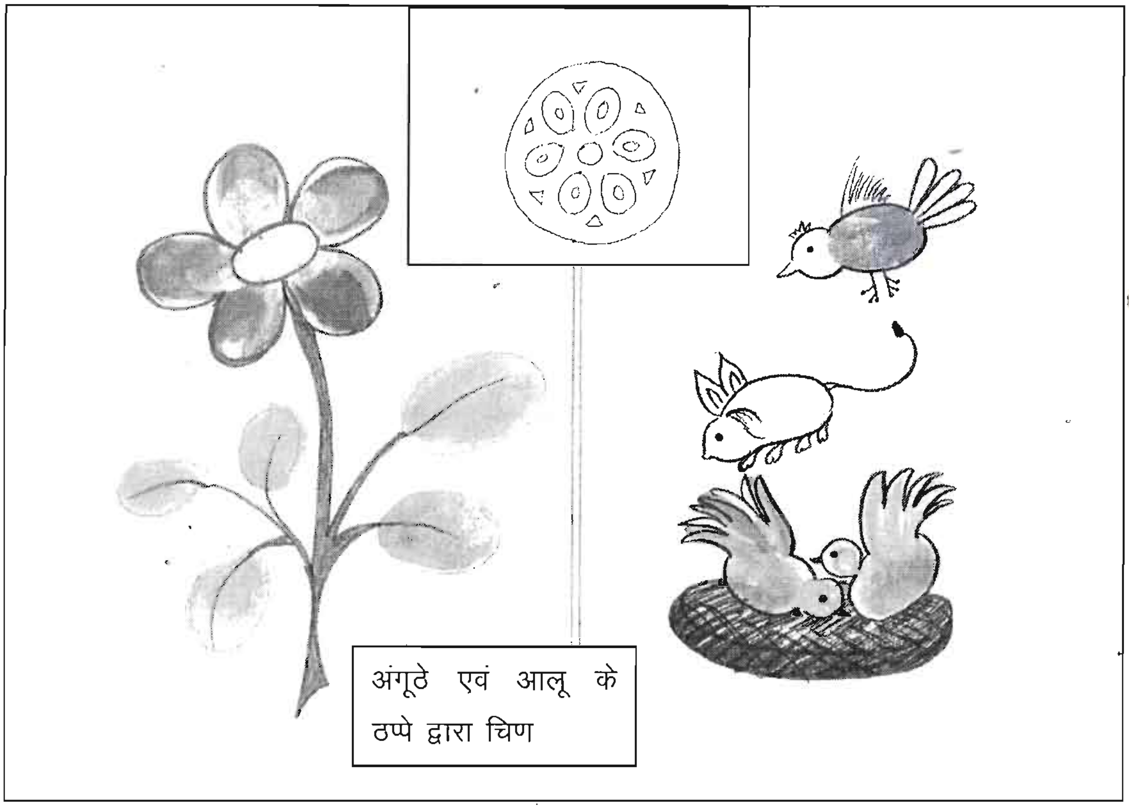

अंगूठे एवं आलू के ठप्पे द्वारा चिण

हैं। विभाजित करने के बाद आलू के एक भाग, जिस पर चित्र या आलेखन छापना होता है उसकी आकृति का विलोम नमूना पेन्सिल द्वारा बना लेते हैं। यदि चित्र काले छापने हैं, तो पेन्सिल द्वारा बनायी गयी आकृति को छोड़कर उसके चारों ओर की पृष्ठभूमि को चाकू द्वारा काटकर निकाल देते हैं। यदि काली पृष्ठभूमि का आलेखन का निर्माण है तो पेन्सिल द्वारा बनायी गयी आकृति की रेखाओं को कुरेदकर गहरा कर देते हैं। इस प्रकार आलू का ठप्पा बनकर तैयार हो जाता है। उसके बाद छपाई करने के लिये स्याही पैंड बनाकर ठप्पों को पैड पर ठोककर छपाई तथा सजावट की जा सकती है। इसी प्रकार अंगूठे के द्वारा चित्रण किया जा सकता है।

इन्हें समझे तथा बनायें   *ठप्पों का निर्माण कैसे किया जाता है? किसी एक ठप्पे का स्वयं निर्माण करें।*